बी०ए० I समाज शास्त्र

PAGE NO.
DATE / /

सामाजिक संस्थाएं : नातेदारी
(social institutions kinship)

अंग्रेजी भाषा के (kinship) शब्द की हिन्दी संगोत्रता, बन्धुत्व, नातेदारी एंव स्वजन की गयी है। नातेदारी एंव विवाह जीवन के आधार भूत तथ्य है। यौन इच्छा विवाह को जन्म देती है और विवाह परिवार एंव नातेदारी को सृष्टि के आरम्भ से ही जीन बातो ने व्यक्तियो को एकता के सूत्र मैं बन्धन मैं महत्व भूमिका अदा की है।

उपयुक्त सन्दर्भ मैं हम कह सकते है कि नाते धारी का प्रत्येक समाज मे बहुत महत्व है। संगमन गर्भावस्था पितृत्व समाजीकरण सहोदरता आदि जीवन के मूल भूत तथ्यो के साथ मानव व्यवहार का अध्ययन ही नातेदारी का अध्ययन है।

नातेदारी का परिभाषा —

—×—×—

चार्ल्स विनिक के अनुसार — "संगोत्रता (नातेदारी) व्यवस्था मैं समाज द्वारा मान्यता प्राप्त वे सम्बन्ध आ सकते है जोकि अनुमानित और वास्तविक वंशावली सम्बन्धो पर आधारित हो"

रेडक्लिफ ब्राउन के अनुसार —

"नातेदारी सामाजिक उद्देश्यों के लिए स्वीकृत वंश सम्बन्ध है जो कि सामाजिक सम्बन्धों के सम्पर्कात्मक सम्बन्धों का आधार है।"

डॉ० रिवर्स के अनुसार — "संगोत्रता (बन्धुत्व) उन सम्बन्ध से है जो वंशावलियों के माध्यम से निर्धारित तथा वर्णित की जा सकती है।"

लूसी मेयर के अनुसार — "बन्धुत्व में सामाजिक सम्बन्धों को जैविक शब्दों में व्यक्त किया जाता है।"

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि हम संगोत्र में उन व्यक्तियों को सम्मिलित करते हैं जिनसे हमारा सम्बन्ध वंशावली के आधार पर होता है।

नातेदारी के भेद —

सामाजिक सम्बन्धों में से सार्वभौमिक और आधारभूत सम्बन्ध वे हैं जो

प्रजनन पर आधारित होते हैं। यह दो प्रकार के सम्बन्ध को जन्म देती है।

(1) समरक्त सम्बन्ध — प्रजनन के आधार पर उत्पन्न होने वाले सामाजिक सम्बन्धों में से एक प्रकार वह है जो रक्त या समरक्त के आधार पर बनता है। माता-पिता एवं सन्तानों के बीच का सम्बन्ध। माता-पिता से वाहकाणु (Genes) ग्रहण करती है।

विवाह सम्बन्ध — प्रजनन पर आधारित नातेदारी सम्बन्धों में विवाह सम्बन्ध भी है केवल पति-पत्नि ही विवाह सम्बन्धी नहीं है वरन उन दोनों के परिवारी को अनेक सम्बन्धी भी परस्पर विवाह सम्बन्धी होते हैं जैसे — सास, ससुर ननद, भौजाई, जीजा साली साला सम्बन्धी आदि।